शायरी की दुनिया

लेखक

मुस्ताक अली शायर

देखकर कारनामे मेरे
दांतो तले उंगलियां चबाने लग जाएंगे
बता दूं अगर इश्क के किस्से अपने
यह जो आशिक लोग है
मेरे पैर दबाने लग जाएंगे।।
मुस्ताक अली शायर।।

मैं एक राज हूं
पहेलियां चाहिए मुझको
बीवी के साथ-साथ
उसकी सारी सहेलियां चाहिए मुझको।।
मुस्ताक अली शायर।।

हुस्न के जलवों के सामने
सांसों को कर दूं आहिस्ता
ये हो नहीं सकता
हसीनों की भीड़ में
सिर्फ एक से ही रखूं वास्ता
ये हो नहीं सकता
बीवी के डर से
मंडराना छोड़ दूं पड़ोसन के घर का रास्ता
ये हो नहीं सकता।।
मुस्ताक अली शायर।।

कभी अडोसन
तो कभी पड़ोसन
दिल को भाती है
हजारों करीब है
न जाने फिर किसकी याद आती है।।
मुस्ताक अली शायर।।

पकड़ा जब बीवी ने
मुझे पड़ोसन के साथ
सारी रात होती रही मुझपर
बर्तनों की बरसात।।
मुस्ताक अली शायर।।

खुशी से गम से
जिससे चाहे यारी रखो
बीवी चाहे एक हो
लेकिन गर्लफ्रेंड ढेर सारी रखो।।
मुस्ताक अली शायर।।

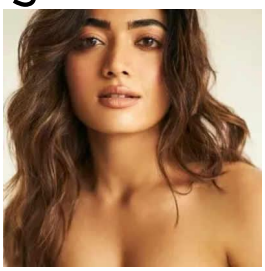

बीवी हकीकत
पड़ोसन खूबसूरत ख्वाब लगती है
बीवी आजाब
पड़ोसन सवाब लगती है।।
मुस्ताक अली शायर।।

एक ही कतरे में
सारा सागर आ गया
दिल थाम कर बैठना ये हसीनाओं
इश्क का सौदागर आ गया।।
मुस्ताक अली शायर।।

हर शहर हर गली में
इश्क की दुकान खोल दूंगा
बन जाऊं अगर एक दिन के लिए
मुल्क का वजीरे आला
सारी खूबसूरत हसीनाओं को
अपने नाम कर दूंगा।।
मुस्ताक अली शायर।।

बीवी एक डरावनी
 बिल्ली हैं
हवा में ख्वाबों के महल
 बनाने वाली शेखचिल्ली हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

मंजूर नहीं फैसला कुदरत का
लेकिन जिंदगी मेरी मजबूर हैं
शायद मेरी दुआ खुदा के दर से
बहोत दूर हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

किसी को पाने के लिये
खुद को गुमनाम होना जरुरी हैं
इश्क में मशहूर होने के लिये
थोड़ा बदनाम होना जरुरी हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

मोहब्बत की चंद लहरों से
दिल के समंदर में सुनामी आ गयी
मीलन की कुछ आजादी के खातीर
उम्रभर के लिये हक में
यादों की गुलामी आ गयी।।
मुस्ताक अली शायर।।

किस्मत भी रो रही हैं
मेरी बर्बादी का मंजर देखकर
नन्ही सी आखों में
अश्कों का समंदर देखकर।।
मुस्ताक अली शायर।।

दोस्ती में दूरी अच्छी नहीं
बात भी ना कर सको
इतनी भी मजबूरी अच्छी नहीं।।
मुस्ताक अली शायर।।

दिल की हर धड़कन
तेरी मोहब्बत दुहाई देती हैं
बंद आखों में भी तेरा चहेरा
दिखाई देता हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

सच्ची मोहब्बत होती हैं
सिर्फ एक ही दफा
बार बार लग जाए इश्क लत तो
पाकीजा इबादत हो जाती हैं
ये खफा।।
मुस्ताक अली शायर।।

अक्सर गुमराह हो जाते हैं लोग
मोहब्बत की राह में
सब कुछ लुटा देते हैं
किसी को पाने की चाह में।।
मुस्ताक अली शायर।।

बिना हमसफ़र के
राहे इश्क में बढा नहीं जाता
वक्त पर अदा किया करो सजदे
मोहब्बत की नमाज़ को
कजा में पढ़ा नहीं जाता।।
मुस्ताक अली शायर।।

सेहरा की तलब है प्यास की
समंदर नदी तालाब
खुश्क जिनत हैं बस अहसास की।।
मुस्ताक अली शायर।।

सजा मिला तो मिली
राहत भी जरुरी हैं
प्यार मोहब्बत मे चाहत भी
जरुरी है।।
मुस्ताक अली शायर।।

तू मेरी हैं
ऐलान कर दे
मेरी गम के छोटेसे मकान को
खुशियो का सारा जहान कर दे।।
मुस्ताक अली शायर।।

साथ दोगी तो कभी
साथ नही छोड़ूंगा
हर खुशी का रास्ता तेरी ओर
मोड़ूगा।।
मुस्ताक अली शायर।।

जो मानता नही
उसे मनाना कैसा
गाफिल हो इश्क से
उसे प्यार जताना कैसा।।
मुस्ताक अली शायर।।

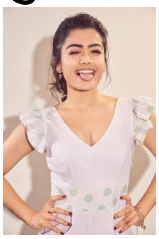

जंगली बबुल जैसा हैं करदार मेरा
तू सियानी गाय
कलम और चाकू का
कैसे मिलन हो पाये।।
मुस्ताक अली शायर।।

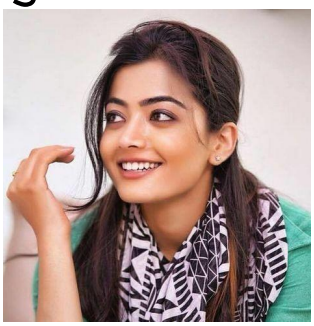

शोक हमारा समझ नही
पायेगा जमाना
मुमकीन नही हर किसी को
दर्द की जमी पर
गम का महल बनाना।।
मुस्ताक अली शायर।।

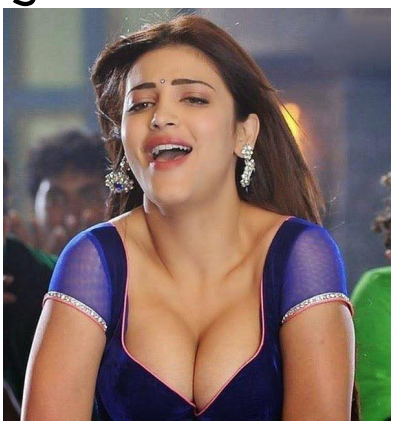

किरदार बदलते रहते हैं लोगो के
गाव हो या शहर
दिलों में तो हैं काली गहरी रात
उपर से दिखाते हैं पहर
मुस्ताक अली शायर।।

दिल के आप भी बुरे नही
बस किस्मत के मारे हैं
इल्म हैं हमें आप के हक में भी
दर्द बहोत सारे हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

हमे मिली ही बदमाशी विरासत में
तो अकड़ जरुरी हैं
शराफत से मिलो की दूरी है।।
मुस्ताक अली शायर।।

मुकम्मल मोहब्बत की
अधुरी दास्ताँ बना गयी
वफा में गिरफ़्तार थी
मरकर भी अपना वादा निभा गयी।।
मुस्ताक अली शायर।।

जिस्म की खुबसूरती शायर को
रास नही आती
जिसका दिल हैं खुबसूरत वो
पास नही आती।।
मुस्ताक अली शायर।।

एक एक हसीना से इश्क करुगा
हो खुबसूरती की मलिका
उस पर एक बार नही
हजार बार मरुगा।।
मुस्ताक अली शायर।।

हर खुबसूरत हसीना का
दिल चुरा लूगा
एक दो से मेरा क्या होगा
पागल शायर हू
हसीनाओ की सारी की सारी
महफिल चुरा लूगा।।
मुस्ताक अली शायर।।

मोहब्बत में लाजमी हैं
चाहत की बात हैं
रुबरु ना सही
कम से कम ख्वाबों में
मुलाकात हो।।
मुस्ताक अली शायर।।

मेरी चाहत हैं
तेरे गेसू के तले बिस्तर डाल के
सो जाऊ
तोड़ कर जमाने से सारे रिश्ते नाते
बस तेरी ही हो जाऊ।।
मुस्ताक अली शायर।।

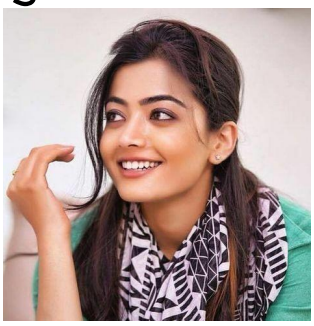

आगे बढ़ चुका हैं जमाना
लेकिन दिल अभी भी
वही रुका हैं।।
दिल धड़कन सांसे पहिले से ही
तेरी हैं
अब ये जिस्म भी तेरा हो चुका हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

पड़ोसन से कर बैठे दिल्लगी
मिलन कोसो दूर हैं
हक में सिर्फ इंतजार की
घड़ीया मिली।।
मुस्ताक अली शायर।।

दिल के दरवाजे पर
दस्तक किसने दी हैं
मशगूल था मैं
इश्क ए इबादत में
खलल लाने की किसने
ये गुस्ताखी की हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

मोहब्बत किस्मत वालों
को मिलती हैं
ये वो कली हैं
जो बहोत मुश्किल से
खिलती हैं।।
मुस्ताक अली शायर।।

मेरे सर पर भी
मोहब्बत का ताज होता
मेरी चाहत पर
सबको नाज होता
तुम सिर्फ मेरे हो
काश ये तुम्हारा
अल्फाज होता।।
मुस्ताक अली शायर।।

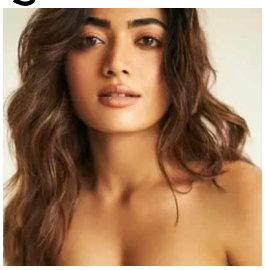

प्यार में हमे भी कोई
आजादी मिल जाये
गुलशन में बहारों की
हमे भी कोई आबादी मिल जाये
जिसे देखकर जन्नत की
हूर भी शरमा जाये
ऐसी हमे भी कोई
शहजादी मिल जाये।।
मुस्ताक अली शायर।।

नफरत के बदले नफरत
उसूल हैं तो
मोहब्बत के बदले मोहब्बत
लाजमी करो।।
मुस्ताक अली शायर।।

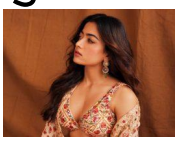

मदभरी आखों
नशीला बदन हैं
सभाल के रखना इन्हें
शायर जोशीला हैं।।